नाम- डॉ. प्रदीप कुमार राय
एसो.प्रोफेसर, रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम।

वर्ग- बी.ए.(प्रतिष्ठा) पार्ट-02 ; सत्र- 2019-20
पेपर- 04
दिनांक 29.05.20

टॉपिक- अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन के आदर्शवादी उपागम या दृष्टिकोण-

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन के संबंध में आदर्शवादी उपागम 'क्या होना चाहिये' जैसे नैतिक विचार से संबंधित है। इसमें इसने एक ऐसे अंतर्राष्ट्रीय समाज की कल्पना की गई है जिसमें शक्ति आधारित राजनीति एवं राजसत्ता, अनैतिक साधन, हिंसा का कोई स्थान नहीं है। यह राजनीतिक नैतिकता, अंतर्राष्ट्रीय लोकमत, विश्व संघवाद, विश्व सरकार जैसे आदर्शों में विश्वास करता है।

इस दृष्टिकोण का उदय 18वीं शताब्दी में हुआ। सन् 1795 ई. में कोण्डरसेट ने अपने ग्रन्थ में एक ऐसी विश्व व्यवस्था की कल्पना की जिसमें युद्ध, विषमता और अत्याचार का कोई स्थान नहीं था तथा मानवीय मूल्यों, नैतिकता और आदर्श समाज के विकास की बात कही गई। इन सबकी प्राप्ति के लिये मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाना ही इसका मूल ध्येय है। इसके लिये यह भी आवश्यक है कि नैतिक और मानवीय मूल्यों पर आधारित अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं एवं कानूनों का सृजन किया जाये।

आदर्शवादी उपागम की विशेषतायें-

Scanned with CamScanner

(1.) यह मानव समाज के अच्छाई में विश्वास रखता है जिसका सार्थक और सही प्रभाव अंतर्राष्ट्रीय व्यवहारों पर भी पड़ सकता है।

(2.) यह मानवीय कल्याण एवं मानवीय सभ्यता के विकास के संबंध में सार्थक दृष्टिकोण से संबंधित है।

(3.) मानवीय व्यवहारों की कुरीतियों एवं बुराइयों के पीछे गलत एवं बुरे पर्यावरण उत्तरदायी है तथा इसको नियंत्रित इसमें सुधार कर लाया जा सकता है।

(4.) युद्ध एक निकृष्टतम अवस्था है और इसके लिये अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में सुधार अपेक्षित है।

(5.) अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का प्रयास युद्ध, हिंसा एवं अत्याचार की समाप्ति के लिये होनी चाहिये तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के प्रति भी इनसे संबंधित नकारात्मक प्रवृत्तियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिये।

(6.) अंतर्राष्ट्रीय शांति, विकास और उन्नति के लिये अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं को प्रोत्साहित और संवर्धित करना चाहिये।

गांधी, रसेल, विल्सन, रॉबेन आदि को इसका समर्थक एवं चिंतक कहा जा सकता है। आदर्शवादी अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को ऐसा साधन मानते हैं जिसका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय न्याय का विकास करना है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये विदेशनीति का संचालन होना चाहिये।

<u>समालोचना</u> — आदर्शवादी उपागम अपने दृष्टिकोण में कल्पनावाद से युक्त है

अंतर्राष्ट्रीय संबंध में आदर्शवादी विचारधारा का व्यावहारिक
अव्यावहारिक सिद्ध हुआ है। इसे हम निम्न बातों से
आलोचना को अंकित कर सकते हैं —

(1.) आदर्शवादी विचारकों की मान्यता है कि इसके लिये आवश्यक है कि सभी राज्य पारस्परिक संबंधों के संचालन में बल और सैन्य शक्ति के स्थान पर नैतिक सिद्धांतों का प्रयोग करें जिससे सब सामंजस्य कर सकते हैं। किन्तु ई.एच.कार के शब्दों में,

(2) इस विश्व में परस्पर विरोधी स्वार्थ और संघर्ष इतने प्रबल हैं कि इनके होते हुये नैतिक सिद्धांतों को पूर्णतया स्थापित नहीं किया जा सकता।

(2.) आदर्शवादी व्यवस्था की स्थापना के लिये उग्र, सैनिकवादी एवं हिंसक शक्तियों का पूरा दमन और विरोध किया जाना चाहिये।

(3.) इस सिद्धांत में जिस प्रकार से राज्यों से उच्च नैतिक सिद्धांतों की अपेक्षा की गई है वह मृग-मरीचिका के समान है।

राष्ट्रसंघ की असफलता, द्वितीय विश्वयुद्ध, शीत युद्ध, क्षेत्रीय संघर्ष, निरंतर सामरिक शक्ति, शस्त्रों की होड़, क्षेत्रीय सैन्य गुट आदि दर्शाते हैं कि आदर्शवादी उपागम आधारित विचार एवं सिद्धांत अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के व्यवहार से कोसों दूर हैं।

इन सबके बावजूद हम इस तथ्य से इनकार नहीं कर सकते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय समाज मनुष्य के स्वाभाविक विकास, शांति एवं सौहार्द तथा समानता, स्वतंत्रता, भ्रातृत्व जैसे मूल्यों एवं आकांक्षाओं को प्राप्त करने के लिये हमें नैतिक एवं पवित्र साधनों को अपनाना होगा तभी आदर्शवादी पूर्ण उद्देश्य

Scanned with CamScanner